मेहनती किसान और सोने का खेत

Dipendra Bhatt

छोटे से गाँव में रामू नाम का एक मेहनती किसान रहता था। वह सुबह सूरज उगने से भी पहले उठ जाता था, जब तारे अभी भी टिमटिम रहते थे। अपने प्यारे खेत में जाकर, वह खुशी-खुशी मिट्टी खोदने और बीज बोने का काम करता था। उसकी मुस्कान और उसके पसीने की ब खेत को हरा-भरा रखती थीं।

एक चमकीली सुबह, जब रामू अपने खेत में हल चला रहा था, उसकी कुदाल अचानक किसी कठोर चीज़ से टकराई। मिट्टी हटाकर देखा, तो उसकी आँखें चमक उठीं! वहाँ सोने के सिक्कों का एक बड़ा ढ था, जो सूरज की रोशनी में जगमगा रहा था। रामू खुशी से उछल पड़ा जैसे उसे कोई जादुई खज़ाना मिल गया हो।

रामू ने वह सारा सोना बेच दिया और पलक झपकते ही बहुत अमीर बन गया। उसने खेती छोड़ दी और सोचा कि अब उसे कभी का नहीं करना पड़ेगा। वह आलीशान घर में रहने लगा, नए कपड़े पहनने ल और हर दिन स्वादिष्ट खाना खाता था। उसका खेत खाली पड़ा रहता थ धीरे-धीरे सूखता जा रहा था।

लेकिन रामू ने सोचा नहीं था कि पैसे खर्च करना कितना आसान होता है। उसने बिना सोचे-समझे बहुत सारा पैसा खर्च कर दिया। एक दिन, उसने अपनी तिजोरी खोली, तो वह खाली थी! उसके पास अब एक भी सिक्का नहीं बचा था, और वह फिर से गरीब हो गया था।

रामू उदास होकर अपने पुराने, सूखे खेत को देखता रहा। उसे अपनी गलती का एहसास हुआ कि उसने मेहनत करना क्यों छोड़ दिया उसकी आँखें भर आईं, लेकिन फिर उसने हिम्मत बटोरी। उसने तय कि कि वह फिर से मेहनत करेगा और अपनी ज़िंदगी को फिर से बनाएगा।

अगले दिन सुबह, रामू फिर से सूरज उगने से पहले उठा। उसने अपनी पुरानी कुदाल उठाई और अपने खेत की ओर चल पड़ा। उसने धीरे-धीरे सूखी मिट्टी को फिर से खोदना शुरू किया। यह मुश्किल था लेकिन रामू ने हार नहीं मानी।

जैसे ही रामू ने कड़ी मेहनत से एक और जगह खोदी, उसकी कुदाल फिर से किसी चमकीली चीज़ से टकराई। मिट्टी हटाते ही, वह फिर से सोने के सिक्कों का एक बड़ा ढेर था! यह एक और जादुई खज़ाना था, जो उसकी मेहनत का इनाम था। रामू की आँखें खुशी से चमक उठीं।

इस बार, रामू ने सोना देखा, लेकिन वह पहले की तरह सिर्फ खुश से उछला नहीं। उसने समझ लिया था कि असली धन सिर्फ सोना नहीं बल्कि उसकी अपनी मेहनत और लगन है। उसने सीखा कि जब तक वह मेहनत करता रहेगा, तब तक वह कभी गरीब नहीं होगा। यह ज्ञान उसके लिए सोने से भी ज़्यादा कीमती था।

रामू ने उस सोने का उपयोग अपने खेत को और भी बेहतर बनाने के लिए किया। उसने खेती कभी नहीं छोड़ी, चाहे उसके पास कितना सोना क्यों न हो। वह अब भी हर सुबह जल्दी उठता था और अपने खेत खुशी-खुशी काम करता था। उसकी फसलें हमेशा हरी-भरी रहती थीं।

रामू और उसका परिवार अब हमेशा खुश रहते थे। उसके बच्चे ध
खेत में उसकी मदद करते थे और उससे सीखते थे कि कड़ी मेहनत ह
सबसे बड़ा धन है। वे जानते थे कि मेहनत का फल हमेशा मीठा होता
और कभी हार नहीं माननी चाहिए।